हिन्दी साहित्य

द्वितीय प्रश्न–पत्र–कथा साहित्य (उपन्यास एवं कहानी)

Time Allowed : Three Hours **Maximum marks : 100**

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये –

(क) पथ अंधकरमय था और मधूलिका का हृदय निबिड़ तम से घिरा था। उसका मन

uestionpaperesult.com

Scanned by CamScanner

सहसा विचलित हो उठा, मधुरता नष्ट हो गई। जितनी सुख कल्पना थी, वह जैसे अंधकार में विलीन होने लगी। वह भयभीय थी। पहला भय उसे अरूण के लिए उत्पन्न हुआ, यदि वह सफल न हुआ तो फिर सहसा सोचने लगी–"वह क्यों सफल हो? श्रावस्ती दुर्ग एक विदेशी के हाथ में क्यों चला जाये? मगध कोसल का चिर शत्रु, ओह उसकी विजय।' 10

अथवा

हीरा सिहं लाज से गड़ जाने लगा। वह कैसे बताये कि रूपयों की बात बिल्कुल नहीं है। जिस पर ये सेठ तो उसके अन्नदाता हैं। फिर ये ऐसी बातें क्यों करते है? उसी जवाहर की तरफ से सचमुच शंका थी। लेकिन इस गरीबी के दिनों में गाय दिन–पर–दिन एक समस्या होती जाती थी। उसका रखना भारी पड रहा था। पर अपने तन को क्या काटा जाता है? काटते कितनी वेदना होती है। यही हीरा सिहं का हाल था।

(ख) एकाएक चबूतरे पर बैठकर ही आन्नदी फूंट–फूटकर रो पड़ी। ऊपर से सदा ही शांत रहने वाले पर्वत की भीतर ज्वालामुखी जब फूटता है तो कोई भी शक्ति उस आवेग को रोक नहीं पाती। बारह साल बाद वह कल पने किशनू को देखेगी। उसका बेटा, उसका खोया हुआ बेटा वापस आ रहा है। ....शंकर आज के दिन भी शराब पीने गया। क्यों नहीं वह सारे मोहल्ले में दौड़ता फिरा? क्यों नहीं उसने घर–घर जाकर खबर दी कि किशनू आ रहा है? क्यों नहीं उसके पास बैठकर उसने बात की कि किशनू के आने की तैयारी में क्या–क्या किया जाये? 10

अथवा

मेरे इस प्रश्न पर विचारमग्न हो गये। कोई जवाब नहीं दिया। उनकी कोई प्रतिक्रिया नहीं मिलने पर मैं वहाँ से उठ खड़ा हुआ–"ठीक है अपना दुःख दर्द आपको बताना मेरा फर्ज था, आपसे मदद की गुहार करना लाजमी था। कह–सुन दिया.....आप मेरी मदद करोगे तो अच्छा, नहीं करें तो अच्छा। हाँ इतना बताये देता हूँ, जब तक मेरे दम में दम है, मैं अपने खेत में इस जालिम द्वारा बोवनी करना तो दूर उसकी छाँह तक नहीं पड़ने दूँगा। मेरी लाश गिरने पर ही वह मेरे खेते में बोवनी कर सकेगा। चलता हूँ।

(ग) तुम्हारा दूसरा अनुमन ही सही है। रोगी से पहले उसकी सेवा–सुश्रूषा करने वाला अपना सम्बन्धी ही उसकी बीमारी से ऊब जाता है। मनुष्य को अपाहित बनाने वाली विभिन्न असाध्य बीमारियों से रोगी तो जूझता है–उसकी जिजीविषा नहीं मरती। सब पूछो तो दूसरों की शांति–चैन के लिए ही कभी–कभी उसमें खुदकुशी करने की भी इच्छा उत्पन्न होती है। उसके पास रहते, कभी–कभार मिलने–जुलने आती, शुभ–चिन्तक, झपकियाँ लेती उसकी जिजीविषा को थपकियाँ देकर ऐसे सुला देते हैं मानो सोया नहीं मृत्यु को वरण किया हो। 10

अथवा

कोई भी चीज अपने छोटे रूप में जितनी अच्छी लगती है उतनी अपने वृहद् रूप में नहीं। बड़े होने पर उसकी कोमलता जाती रहती है। संस्था के छोटे आकार में हम हर तरफ से देख पा रहे हैं। इतनी सतर्कता के बावजूद कोई न कोई बात उठ खड़ी

questionpaperresult.com

Scanned by CamScanner

होती है, जो संस्था के विकास के हित में नहीं। इसको बहुत बड़ा बनाकर ढेर सारे व्यवस्थापकों को संभालना, उनकी आँखों में भी अपनी दृष्टि डालना आसान तो नहीं। सहायता कार्य के नाम पर देश में संस्थाओं की कमी नहीं, लेकिन क्या रोगियों और अवसरवादियों की उचित सहायता हो पा रही है।

2. 'पूस की रात' कहानी का नायक कौन है? उसकी चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 15

अथवा

'ताई' कहानी के नामकरण की सार्थकता एवं इसकी मूल संवेदना को स्पष्ट कीजिए।

3. कहानी कला के आधार पर 'नशा' कहानी का मूल्यांकन कीजिये। 15

अथवा

'मेरा घर कहाँ' कहानी के आधार पर सोना का चरित्र-चित्रण कीजिये।

4. "मृदुला सिन्हा का 'ज्यो मेहँदी को रंग' उपन्यास अतीव मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी रचना है।" 15

अथवा

'ज्यों मेहँदी को रंग' उपन्यास की प्रमुख और जीवन्त नारी पात्र शालिनी के व्यक्तित्व और चरित्र का विश्लेषण कीजिये।

5. कहानी की परिभाषा लिखते हुए हिन्दी कहानी के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिये। 13

अथवा

उपन्यास के प्रमुख तत्त्वों पर प्रकाश डालिये।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिये– 6+6

(1) कहानी के तत्त्व (2) आंचलिक कहानी

(3) प्रेमचन्द की हिन्दी उपन्यास को देन (4) प्रेमचन्दोत्तर उपनयस

(5) जैनेन्द्र कुमार की कहानी कला

uestionpaperesult.com

Scanned by CamScanner